2

बरगद का वृक्ष

• लोककथा •

झुरमुट	परस्पर	दाढ़ी	दृष्टि	होशियारी	तिरस्कार
हड़बड़ाना	बुद्धिमानी	घमंड	इल्लियाँ	नम्रता	प्रकृति

बहुत समय पहले की बात है। धरती पर चारों ओर पेड़-पौधों के झुरमुट, वन, पशु-पक्षी थे। मानव नाम का प्राणी भी था।

हाँ, एक विचित्र बात थी। उस समय सभी प्राणी, पेड़-पौधे, पशु-पक्षी सब एक-दूसरे की भाषा समझते थे। परस्पर बातचीत भी करते थे। एक छोटे-से गाँव के बाहर हरे-भरे मैदान थे। बरगद का एक बहुत विशाल वृक्ष था। उसका लंबा, मोटा तना था। उसके पत्ते घने थे। शाखाएँ चारों ओर फैली थीं। उसकी शाखाओं से दाढ़ी निकलकर धरती तक आ रही थी। लगता था कि वह वृक्ष वहाँ बहुत वर्षों से खड़ा था।

मैदान में कुछ गड़रिए अपनी भेड़-बकरियाँ चराने आते थे। उनमें से एक लड़का अपनी बकरियों के साथ आया करता था। गरमी के दिन थे। बकरियों के साथ इधर-उधर घूमते हुए वह गड़रिए का लड़का थककर पस्त हो गया था। कुछ देर आराम करने के लिए वह बरगद के उसी वृक्ष के नीचे आ बैठा।

बरगद के नीचे छाया थी। हवा भी शीतल थी। हवा के हलके-हलके झोंके लड़के को थपथपाने लगे। पेड़ के तने से लगा लड़का वहीं लेट गया। तभी उसकी दृष्टि पेड़ पर लगे छोटे-छोटे फूलों और फलों पर गई।

लड़के के पास पहले केवल एक बकरी थी, पर धीरे-धीरे उसने अपनी होशियारी से अपने झुंड को काफ़ी बड़ा कर लिया था। वह अपने आपको कुछ समझने लगा था। बरगद के फूल और फलों को देख वह तिरस्कार की हँसी हँसा। बोला, "वाह रे विशाल पेड़! बस खुद ही बड़े हुए, अपने फूलों और फलों को तो देखो! अपनी लटकती दाढ़ी को तो देखो! हा-हा-हा! हा-हा-हा!"

बरगद ने सब सुना परंतु बोला कुछ नहीं। तभी हवा चलने लगी। पत्तों से सर्र-सर्र की हलकी ध्वनि निकली जैसे वे कोई लोरी गा रहे हों। लड़के की शीघ्र ही आँख लग गई। तभी एक-दो फल उसके मुँह पर आ गिरे। वह हड़बड़ाकर उठ बैठा। उसने ऊपर देखा। उसे किसी के हँसने की आवाज़ सुनाई दी। लड़के को थोड़ा क्रोध आया—एक तो मेरी नींद खराब कर दी, ऊपर से हँस रहा है।

वृक्ष ने भारी आवाज़ में पूछा, "क्यों, चोट लगी क्या? छोटा-सा तो फल था। इतने में ही घबरा गए! अब सोचो, यदि मेरे पेड़ पर तरबूज जितना बड़ा फल होता तो!"

वृक्ष फिर बोला, "मित्र! किसी को छोटा या कम समझना बुद्धिमानी की बात नहीं है। यह तो घमंडी होना है। और घमंड करना तो किसी के लिए भी उचित नहीं। अब देखो, मैंने अपनी छाया देकर तुम्हें धूप-ताप से बचाया। मेरे तने ने तुम्हें सहारा दिया। मेरी पत्तियों से छनकर हवा शीतल हुई। तुम्हें सुख मिला और तुम सो गए। चिड़ियाँ मुझ पर बसेरा करती हैं और मेरे छोटे-छोटे मीठे फल खाती हैं। देखो तो प्रकृति कितने सुंदर ढंग से अपना काम करती है।"

लड़के ने कहा, "मुझसे गलती हो गई, बरगद दादा! मैंने इस तरह तो सोचा ही न था। मुझे अपने बारे में कुछ और बताइए।"

बरगद बोला, "पहली बात तो यह कि प्रकृति से दोस्ती करो। हम सब एक-दूसरे से कुछ-न-कुछ लेते हैं। मेरे फल चिड़ियों का भोजन हैं। मेरी शाखाओं पर उनके घोंसले हैं। चिड़ियाँ सारा दिन घूम-घूमकर अपने बच्चों के लिए छोटे-छोटे कीड़े और इल्लियाँ ढूँढ़ती हैं। इल्लियाँ मेरे पत्ते खाती हैं, चिड़ियाँ उन्हें खाकर मेरी मदद करती हैं। वे घास-पत्ते खाने वाले कीड़ों से घास-पत्तों की रक्षा करती हैं। तुम्हारी भेड़ें उस घास को खाती हैं।"

"बरगद दादा, चुप क्यों हो गए! कुछ और भी कहो।" लड़के की आवाज़ में नम्रता भरा आग्रह था।

"ठीक है! मेरे आस-पास काफ़ी पत्तियाँ सड़ रही हैं। केंचुए इन सड़ी पत्तियों को खाने ज़मीन के नीचे से निकलते हैं। इससे मिट्टी को हवा मिलती है। और पेड़ की जड़ों को शक्ति मिलती है। इस तरह हम सब एक-दूसरे पर निर्भर हैं। हम एक-दूसरे के बिना जीवित नहीं रह सकते।"

"मुझे क्षमा कीजिए बरगद दादा, मुझे इन सबका ज्ञान न था। मैं आपसे कुछ और..."

"अरे! अभी तो अपनी भेड़-बकरियों को देखो, भागी जा रही हैं उधर!" बरगद हँसते-हँसते बोला।

लड़का भाग रहा था अपनी बकरियों को पकड़ने! वह सोच रहा था कि आज मैंने कितना कुछ सीखा! हाँ, प्रकृति में सब कुछ उपयोगी है। जब हम सब एक-दूसरे के बिना नहीं रह सकते, तो बड़े होने का घमंड क्यों?

शब्दकोश

परस्पर – आपस में। **विशाल** – बड़ा। **पस्त होना** – थक जाना। **झुरमुट** – झाड़ियों के घने समूह। **दृष्टि** – नज़र। **तिरस्कार** – अनादर, अपमान। **घमंडी** – अभिमानी। **धूप-ताप** – गरमी। **प्रकृति** – कुदरत। **इल्ली** – सुँड़ी। **आग्रह** – निवेदन। **केंचुए** – मिट्टी के कीड़े।

विशेष : मानक वर्तनी के प्राचीन एवं नवीन रूप

लम्बा	– लंबा	पत्ते	– पत्ते	गड़रिये	– गड़रिए	दृष्टि	– दृष्टि
झुण्ड	– झुंड	परन्तु	– परंतु	हल्की	– हलकी	बुद्धिमानी	– बुद्धिमानी
घमण्ड	– घमंड	सुन्दर	– सुंदर	मिट्टी	– मिट्टी	शक्ति	– शक्ति

समग्र एवं सतत अभ्यास

Summative and Formative Assessment **CCE Based**

पाठ बोध

1. इन प्रश्नों के उत्तर लिखिए: समेटिव असेसमेंट

क. बरगद का वृक्ष कैसा था?

ख. गड़रिए का लड़का जब सो रहा था, तो क्या हुआ?

ग. पेड़ की जड़ें कैसे मज़बूत रहती हैं?

घ. वृक्ष ने लड़के को क्या समझाया?

2. सही उत्तर के सामने ✓ लगाइए:

क. मैदान में गड़रिए क्या करने आते थे?

विश्राम करने ☐ फल-फूल लेने ☐ भेड़-बकरियाँ चराने ☐ ठंडी हवा खाने ☐

ख. पेड़ हमें धूप-ताप से कैसे बचाते हैं?

फूल देकर ☐ छाया देकर ☐ मीठे फल देकर ☐ हवा देकर ☐

ग. चिड़ियाँ पेड़ की मदद कैसे करती हैं?

इल्लियाँ खाकर ☐ पत्ते खाकर ☐ फल खाकर ☐ घोंसला बनाकर ☐

घ. प्रकृति में क्या-क्या चीज़ें उपयोगी हैं?

जीव-जंतु ☐ मिट्टी ☐ पेड़-पौधे ☐ सब कुछ ☐

MCQs

3. ऐसा किसने कहा?

वाक्य	किसने कहा
क. "बस खुद ही बड़े हुए, अपने फूलों और फलों को तो देखो!"	_____
ख. "किसी को छोटा या कम समझना बुद्धिमानी नहीं है।"	_____
ग. "मुझे क्षमा कीजिए, मुझे इन सबका ज्ञान न था।"	_____

भाषा एवं व्याकरण

1. उचित सर्वनाम शब्द छाँटकर खाली स्थान पर लिखिए:

क. कल _____ एक डरावना सपना देखा। — मेरा/मैंने/मुझे

ख. _____ कल सरकस देखने जाएँगे। — मैं/वह/हम

ग. _____ और कितने भाई-बहन हैं? — तुम/तुम्हारे/तुम्हें

घ. _____ चौथी कक्षा में पढ़ता/पढ़ती हूँ। — वह/मैं/तुम

MCQs

2. इन वाक्यों से संज्ञा, विशेषण और क्रिया शब्द छाँटिए:

वाक्य	संज्ञा	विशेषण	क्रिया
क. छोटे-छोटे फलों और लंबी दाढ़ी को देखो।	_____	_____	_____
ख. विशाल वृक्ष हँसने लगा।	_____	_____	_____
ग. इल्लियाँ हरे पत्ते खाती हैं।	_____	_____	_____
घ. शीतल हवा बह रही थी।	_____	_____	_____
ङ. हवा के हलके-हलके झोंके लड़के को थपथपाने लगे।	_____	_____	_____

3. दिए विशेषण शब्दों के लिए उपयुक्त विशेष्य (संज्ञा शब्द) पर ✓ लगाइए:

सुंदर	_____	शाखाएँ	☐	चिड़िया	☐	पक्षी	☐
बूढ़ा	_____	बरगद	☐	लड़का	☐	भेड़-बकरी	☐
नटखट	_____	भेड़	☐	पक्षी	☐	बालक	☐
ताज़ा	_____	पत्ता	☐	फल	☐	वृक्ष	☐

MCQs

याद रखिए : विशेषण जिन संज्ञा शब्दों की विशेषता बताते हैं, उन्हें **विशेष्य** कहते हैं;

जैसे— मस्त **लड़का** मोटा **तना** सड़ी **पत्तियाँ**

उपर्युक्त उदाहरणों में मोटे शब्द **विशेष्य** हैं।

4. खाली स्थान में उचित शब्द छाँटकर लिखिए:

पर, से
में, ने
का, से

क. मेरे बस्ते _____ कहानियों की किताबें हैं।

ख. पौधा पेड़ _____ छोटा होता है।

ग. चिड़िया ने पेड़ _____ घोंसला बनाया।

घ. बच्चों _____ झूला झूल लिया।

ङ. वह वृक्ष बहुत वर्षों _____ खड़ा था।

च. मेरे फल चिड़ियों _____ भोजन हैं।

5. उचित विराम चिह्न लगाकर लिखिए:

क. वाह रे विशाल पेड़ बस खुद ही बड़े हुए _____

ख. घमंड करना किसी के लिए उचित नहीं है _____

ग. मेरे आस पास काफ़ी पत्तियाँ सड़ रही हैं _____

घ. तुमने मुझे धोखा क्यों दिया _____

1. मौखिक उत्तर दीजिए: फॉरमेटिव असेसमेंट

क. गड़रिए गरमियों में कहाँ रुककर आराम करते थे?

ख. लड़का बरगद के पेड़ पर क्यों हँसा?

ग. लड़का हड़बड़ाकर क्यों उठ बैठा?

घ. केंचुए पेड़-पौधों की कैसे सहायता करते हैं?

2. हम अपने आस-पास की चीज़ें देखकर बहुत कुछ सीखते हैं। बताइए, आप इनसे क्या सीख सकते हैं?

सूरज फूल नदी पेड़ किसी और से

3. "हम सब एक-दूसरे पर निर्भर हैं। हम एक-दूसरे के बिना जीवित नहीं रह सकते।"—यह दर्शाते हुए चार्ट पर एक चित्र बनाकर कक्षा में अथवा कक्षा के बाहर बरामदे में लगाइए।